अक्षर

अंक-201 दिसंबर- 2021

सम्पादकीय

सबद निरन्तर

एक जीवनी के निमित्त से : **रमेशचन्द्र शाह** 8

आलेख

महान पुरुवंश की गौरवगाथा : **कुसुमलता केडिया** 18

राजनैतिक दल : पुनर्गठन की सार्थक दिशा : **किशन पंत** 22

महामारी और मोक्ष की बदलती अवधारणाएँ - दो : **विनोद शाही** 26

नवगीतों के शलाकापुरुष : यतीन्द्रनाथ राही : **मनोहर अभय** 30

गद्यभूमि का ललित कांतार : नीम की छाँव : **रामदरश राय** 33

विरह और वेदना का अमर स्वर : महादेवी की कविता : **नवीन नंदवाना** 36

नये सामाजिक माध्यम और जनमत निर्माण : **कविता भाटिया** 40

हिंदी नाट्यालोचन : संश्लिष्ट आलोचना पद्धति : **प्रेमलता** 44

फिल्में एवं राजस्थानी लोक संस्कृति : विजयादान देथा : **पीताम्बरी** 48

साहित्य में चित्रित मछुआरा समाज : **उमेश कुमार सिंह** 51

स्मरणांजलि

मेरे लिये मन्नू जी... : **सूर्यबाला** 55

संस्मरण

मीठी यादें : **शैवाल सत्यार्थी** 58

पुण्यस्मरण

प्रभाकर माचवे और उनका काव्य चिंतन : **राजेन्द्र परदेसी** 60

ललित निबंध

सेतुबंध पर गिलहरी : **गोविन्द गुंजन** 63

अनुवाद (मराठी कविताएँ)

कविता और मैं, मेरे नन्हे से हस्ताक्षर, खो चुका है कवि :
मूल-संजय चौधरी, अनु. : सूर्यनारायण रणसुभे 67

कहानी

रात भर बर्फ : **संतोष श्रीवास्तव** 69

बस थोड़ा वक्त और प्यार चाहिये : **कुसुम अग्रवाल** 72

समय चक्र : **उषा जायसवाल** 78

लघुकथा

भेड़पुरा : **योगेन्द्र शर्मा** 82

कद : **सीताराम गुप्ता** 83

कविता

विध्वंसक : **रामदेव भारद्वाज** 84

पिता, पिता की चिट्ठी : **सुदर्शन वशिष्ठ** 85

रिश्ते होते हैं : **घमंडीलाल अग्रवाल** 86

पिता, भोली बेटियाँ : **अनीता रश्मि** 87

गीत / नवगीत / दोहे

कृपाशंकर शर्मा अचूक के दो गीत 88

गीत : **अशोक कुमार** 89

अहोभाग्य मेरे, जन्म से : **अनुपमा 'अनुश्री'** 90

मीठी तेरी याद : **लक्ष्मीनारायण चौरसिया** 91

कुंडलियाँ : **जय जयराम आनंद** 92

बाल-पृष्ठ

शीश कभी न झुकने देंगे, चंदन वन में : **लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव** 93

समय और विचार - 20

मृत्यु अवकाश पर है : होसे सरामागो (पुर्तगाल) : **रमेश दवे** 94

पुस्तक परिचय

निराला बचपन (शीला श्रीवास्तव) : **सुमन ओबराय,** जीवन के रंग
(विजया बैस रैकवार) : **केतकी** 97

कांकरीट के जंगल (रमेश मनोहरा), राय साहब की चौथी बेटी (प्रबोध कुमार गोविल)
: **अनीता सक्सेना** 98

सही शब्द की तलाश में (दुर्गा प्रसाद झाला) : **ब्रजेश कानूनगो** 99

भारत और ग्वालियर के संग्रहालयों में (अमिता खरे) : **नारायण व्यास** 99

पुस्तक चर्चा

कुछ नीति कुछ राजनीति (भवानी प्रसाद मिश्र) : **रामेश्वर मिश्र पंकज** 100

समीक्षा

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिकशास्त्र (नारायण गोपाल डोंगरे, शंकर गोपाल नेने)
: **वैशाली वाळिंबे** 104

चोंच भर बादल (वीना श्रीवास्तव) : **शिवकुमार अर्चन** 106

साहित्य का धर्म (विश्वनाथ प्रसाद तिवारी): **वन्दना मिश्र** 107

ये शब्द गीत मेरे (सतीश गुप्ता) : **मीना शुक्ला** 108

सरहदों के पार दरख्तों के साए (रेखा भाटिया) : **सुधा ओम ढींगरा** 109

स्त्री-पुरुष (सुरेश पटवा) : **घनश्याम मैथिल 'अमृत'** 110

पत्रांश 111

विरह और वेदना का अमर स्वर : महादेवी की कविता

- नवीन नंदवाना

जन्म - 22 जुलाई 1977।
शिक्षा - एम.ए., पीएच.डी., बी.एड., बी.जे.एम.सी.।
रचनाएँ - पाँच पुस्तकें प्रकाशित।
सम्मान - विश्व हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित।

छायावाद का काल द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता के बाद का है। द्विवेदी युग स्पष्ट व वस्तुगणना पद्धति, इतिवृत्तात्मकता तथा विभिन्न बंधन व नियमों को लेकर चला था। वहीं छायावाद इन सब स्थूल बातों के विपरीत सूक्ष्म की अभिव्यंजना करता है। प्रसाद, पंत, निराला व महादेवी द्वारा रचित कल्पना, रहस्य, लाक्षणिकता व वेदना आदि की सूक्ष्म अभिव्यक्ति देने वाली वे कविताएँ जो विशेषत: 1918-1936 के बीच रची गईं, छायावाद की संज्ञा से अभिहित की गईं। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी छायावाद पर विचार करते हुए लिखते हैं कि-'मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।' (आचार्य नंददुलारे वाजपेयी : हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, पृ. 138) वहीं महादेवी वर्मा-'छायावाद तत्त्वत: प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीत है।' (महादेवी वर्मा : साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 66) मानती हैं।

हिंदी की आधुनिक कविता में छायावाद एक महत्त्वपूर्ण एवं समृद्ध पड़ाव रहा है। जिन चार कवियों ने छायावाद को आधार प्रदान किया, उनमें एक थीं-महादेवी वर्मा। छायावाद की शक्ति के रूप में विख्यात महादेवी वर्मा को हिंदी जगत में आधुनिक मीरा के नाम से जाना जाता है।

आधुनिक हिंदी कविता की सशक्त स्त्री रचनाकार महादेवी वर्मा ने आण्डाल, अक्क महादेवी और मीरा की परंपरा को आगे बढ़ाया। न केवल कविता बल्कि गद्य में भी साधिकार लेखन करने वाली महादेवी का जन्म 25 मार्च, 1907 को उत्तरप्रदेश के फरुखाबाद में हुआ। महादेवी के पिता का नाम गोविंद प्रसाद शिक्षक थे। और माता हेमरानी देवी थीं। बड़ी मन्नत और लंबी प्रतीक्षा के बाद परिवार में कन्या के आगमन को देवी का आशीर्वाद मानने के फलस्वरूप उनका नाम महादेवी रखा गया।

सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत में आस्था रखने वाली महादेवी के व्यक्तित्व पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि जीवन की चकाचौंध के प्रति इनका कोई आग्रह नहीं रहा। गेहुँआ रंग, खादी के वस्त्र, हँसमुख-गोल चेहरा, श्वेत परिधान पहनने वाली उस तपस्विनी साधिका के व्यक्तित्व को हम गंगा प्रसाद पांडेय के इस मत से और अधिक स्पष्टत: समझ सकते हैं-'एक ऐसा व्यक्तित्व जो प्रात: की तरह मधुर, रात की तरह करुण और बरसात की तरह सरस-सजल है। एक ऐसा चित्र जिसे देखकर अपरिचित व्यक्ति भी कह उठे . . . लगता है

इसे पहले कभी देखा है।' (गंगाप्रसाद पांडेय : महादेवी, पृ. 45)

महादेवी की कविता में प्रेम व विरह के सुंदर चित्र विद्यमान हैं। यहाँ मिलन के कम विरह के भाव अधिक हैं। यह मिलन और विरह भी सांसारिक मिलन व विरह दिखाई नहीं पड़ता। कहा जा सकता है कि यह महादेवी का प्रेम किसी अज्ञात सत्ता को समर्पित रहा है। महादेवी की कविता 'यामा' का पहला पड़ाव 'नीहार' है। 'नीहार' की प्रथम कविता में ही हमें प्रेम की उपस्थिति महसूस होती है-

'निशा को धो देता राकेश / चाँदनी में जब अलकें खोल कली से कहता था मधुमास / बता तो मधु मदिरा का मोल झटक जाता था पागल वात / धूलि में तुहिन कणों के द्वार सिखाने जीवन का संगीत / तभी तुम लाए थे इस पार।'

(महादेवी वर्मा : नीहार, यामा, पृ. 01)

इसी गीत में महादेवी अपनी मधुमय पीड़ा का स्मरण करते हुए कहती हैं कि 'असंख्य दीपक निर्वाण पा गए, किंतु मैं तुम्हारे मनमोहक गान नहीं सीख पाई।' अत: थकी हुई अँगुलियों व ढीले तारों से उस अवस्था में वे अपनी अस्फुट झंकार को विश्व-वीणा में मिला देना चाहती हैं।

महादेवी के प्रेम में हम कभी आकांक्षा और नैराश्य के भाव देखते हैं तो कभी विफलता, उन्माद, स्मृति, प्रतीक्षा और उपालंभ के भाव भी पाते हैं। वे अपने प्रेम में तृप्ति नहीं चाहतीं-

'मेरे छोटे जीवन में देना न तृप्ति का कण भर
रहने दो आँखें प्यासी, भरती आँसू के गागर।'

(महादेवी वर्मा : गुंजन, यामा, पृ. 178)

प्रेम में उन्माद की दशा का वर्णन करते हुए, वे लिखती हैं कि-

'कैसे संदेश प्रिय पहुँचाती अपने ही सूनेपन में।
लिखती कुछ, कुछ लिख जाती।' (महादेवी वर्मा : नीरजा, यामा, पृ. 156)

अपने जीवन को विरह का जलजात मानने वालीं महादेवी वेदना में जन्म और करुणा में आवास स्वीकार करती हैं। वे कहती हैं -

'मैं कण कण में ढाल रही हूँ। / आँसू के मिस प्यार किसी का मैं पलकों में पाल रही हूँ। / वह सपना सुकुमार किसी का।'

(महादेवी वर्मा : दीपशिखा, महादेवी वर्मा संचयिता, पृ. 98)

महादेवी की इस विरह वेदना के संबंध में कविवर पंत लिखते हैं कि-'महादेवी के काव्य का सर्वप्रमुख तत्त्व वेदना, वेदना का आनंद, वेदना का सौंदर्य, वेदना के लिए ही आत्मसमर्पण है। वे तो वेदना के साम्राज्य की एक छत्र साम्राज्ञी हैं और कोई सुख उन्हें आत्म-विस्मृत या आत्म-तन्मय होने को नहीं चाहिए। सुख तो क्षणजीवी है, वेदना ही चिरस्थायी, विश्वव्यापी एवं चिर स्पृहणीय है।' (सुमित्रानंदन पंत : महादेवी, सं. इंद्रनाथ मदान, पृ. 10)

चिंता और उद्वेग की दशा में वे पूछती हैं कि-'किसमें देख सँवारूँ कुंतल अंगराग फूलों का मलमल।' किंतु उसमें नारी सुलभ सात्विकता भी है इसी कारण वे बोल पड़ती हैं-

'जो तुम आ जाते एक बार, /कितनी करुणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग; / गाता प्राणों का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग; / आँसू लेते वे पद पखार।'

कहा जा सकता है कि अलौकिकता के मार्ग पर जाते हुए महादेवी के मन में आकांक्षा है तभी तो वे उस परम सत्ता को पाहुन बनकर आने का निमंत्रण देती हैं।

'नयन में नियन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ
शलभ जिसके प्राण में वह निष्ठुर दीपक हूँ
फूल को उर में छिपाये विकल बुलबुल हूँ
एक होकर दूर तन से छाँह वह चल हूँ
दूर हूँ तुमसे अखण्ड सुहागिनी भी हूँ
बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।' (वही, पृ. 52)

महादेवी वर्मा की कविता के इस पक्ष का मूल्यांकन करते हुए डॉ. नगेंद्र कहते हैं कि-'महादेवी वर्मा के काव्य में हमें छायावाद का शुद्ध अमिश्रित रूप मिलता है। छायावाद की अंतर्मुखी अनुभूति अशरीरी प्रेम जो तृप्ति न पाकर अमांसल सौंदर्य की सृष्टि करता है। मानव और प्रकृति के चेतन संस्पर्श, रहस्य, चिंतन, अनुभूति

नहीं। तितली के पंखों और फूलों की पंखुड़ियों से चुराई हुई कला और इन सबके ऊपर स्वप्न-सा पूरा हुआ एक वायवी वातावरण-ये सभी तत्त्व जिसमें घुले-मिलते हैं। वह है महादेवी की कविता।' (शचीरानी गुर्टू, : सं. महादेवी वर्मा की काव्य कला और चिंतन, पृ. 90)

'वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास।' कहकर अपने भावों को अभिव्यक्ति देने वाली महादेवी की कविता में हम दु:ख, करुणा और वेदना को देख सकते हैं। वेदना के तत्त्व महादेवी के काव्य में सर्वत्र विद्यमान हैं। वे अपने प्रिय के विरह में निरंतर वेदना अनुभूत करती हैं। महादेवी का विरह कोई सांसारिक नहीं है। वे परम सत्ता के साथ-साथ अपने भावों को जोड़ते हुए अपनी वेदना और करुणा को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं-'अपने दुखवाद के विषय में दो शब्द कह देना आवश्यक जान पड़ता है। सुख और दुख के धूप-छाँही डोरों से बुने हुए जीवन में मुझे केवल दुख ही गिनते रहना क्यों इतना प्रिय है, यह बहुत लोगों के आश्चर्य का कारण है। इस क्यों का उत्तर दे सकना मेरे लिए किसी समस्या के सुलझा डालने से कम नहीं है। संसार साधारणत: जिसे दुख और अभाव के नाम से जानता है, वह मेरे पास नहीं है। जीवन में मुझे दुलार, आदर और बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है। उस पर पार्थिव दुख की छाया नहीं पड़ी। कदाचित् यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगने लगी है।' (महादेवी वर्मा : यामा, अपनी बात, पृ. 12) वे स्पष्ट कहती हैं कि बौद्ध दर्शन के प्रति अनुराग ने भी मुझे संसार को दुखात्मक मानने वाले दर्शन से परिचित करा दिया। तभी तो महादेवी अपनी करुणा व वेदना का गान करते हुए कहती हैं-

'मेरे बिखरे प्राणों में सारी करुणा ढुलका दो।
मेरी छोटी-सी सीमा में अपना अस्तित्व मिटा दो।
पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा।
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुम में ढूँढूँगी पीड़ा।।' (महादेवी वर्मा : नीहार, यामा, पृ. 29)

महादेवी की पीड़ा कृत्रिम या दिखावा नहीं है। वह उनके हृदय से निश्छल रूप से फूटी है। वेदना का प्रवाह उनके हृदय में कभी भी रुकने का नाम नहीं लेता है। वह अनवरत जारी रहता है। संसार को बुद्ध के दर्शन से समझने वालीं महादेवी अपनी पीड़ा के इस अनवरत क्रम में सुख, शांति या सांत्वना नहीं चाहतीं। वे स्वयं को वेदना के नीर से भरा दुखों का बादल मानती हैं-

'मैं नीर भरी दुख की बदली! / स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा, /नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरणी मचली!' (महादेवी वर्मा : सांध्यगीत, महादेवी वर्मा संचयिता, पृ. 85)

इतनी वेदना और पीड़ा सहने के बाद भी वे जीवन में निराशा को कोई स्थान नहीं देतीं। आशा और विश्वास के साथ वे प्रेम का दीपक जलाए, पूरी आस्था के साथ कहती हैं-

'अपने इस सूनेपन की मैं हूँ रानी मतवाली
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।' (महादेवी वर्मा : नीहार, यामा, पृ. 29)

महादेवी का मन प्याले भर-भरकर वेदना और करुणा ही माँगता है। वे अपने अबोध मन से आँसुओं का ही व्यापार करना चाहती हैं। महादेवी करुणा से आप्लावित अपने हृदय में हो रहे छालों को भी जीवन निधि के रूप में स्वीकार करती हैं। अनन्त करुणा और असीम सूनापन हृदय में सँजोकर, तभी तो वह यह घोषणा करती हैं कि उसका जीवन विरह का जलजात हो गया है-

'विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म, करुणा में मिला आवास,
अश्रु चुनता दिवस अश्रु चुनती रात
जीवन विरह का जलजात।' (महादेवी वर्मा : नीरजा, महादेवी वर्मा संचयिता, पृ. 51)

जलने को रहस्य और मृत्यु को

नैसर्गिक बात मानने वालीं महादेवी अद्वैत की भावभूमि पर चरण रखकर उस परम् ब्रह्म के प्रति अपना विरह-निवेदित करती हैं-

'प्रिय मेरे गीले नयन बनेंगे आरती!
श्वासों में सपने कर गुंफित,
वंदनवार वेदना चर्चित,
भर दुख से जीवन का घट नित,
मूक क्षणों में मधुर भरूँगी भारती।' (महादेवी वर्मा : सांध्यगीत, महादेवी वर्मा संचयिता, पृ. 82)

महादेवी प्रिय के विरह में हैं और अपने प्रियतम के पक्ष में आलोक भरने के लिए वे मधुर-मधुर जलना स्वीकार करती हैं -

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।' (महादेवी वर्मा : नीरजा, महादेवी वर्मा संचयिता, पृ. 56)

इस प्रकार महादेवी की यह वेदना अंतस से फूटी है जो बाहर सृष्टि में आँसुओं के रूप में द्रष्टव्य है। स्मृति के सुख व विरह में वे परमसत्ता से जुड़ना चाहती हैं। उनकी वेदना व्यष्टि से समष्टि की करुणा का गान करती है। वे दीपक के प्रतीक को गढ़कर साँझ से सुबह तक प्रियतम के इंतजार में जागना चाहती हैं।

आँधियारा, निशा, वीणा, लय, झंकार, आँधी, तूफान, घन, बादल, विद्युत, निद्रा, स्वप्न, नौका, प्रलय, शूलि और धूलि आदि प्रतीकों के माध्यम से महादेवी ने अपनी वेदना को वाणी प्रदान की है। दुख पर विचार करते हुए स्वयं महादेवी कहती हैं कि-'दुख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सकें, किंतु हमारा एक बूँद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता। मनुष्य सुख को अकेला भोगना चाहता है, परंतु दुख सबको बाँटकर, विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना, इस प्रकार मिला देना, जिस प्रकार एक जल बिंदु समूह में मिल जाता है, कवि का मोक्ष है।' (महादेवी वर्मा : यामा, अपनी बात, पृ.12) इस प्रकार कहा जा सकता है कि महादेवी के यहाँ विरह और वेदना का करुण गान है।

ए-जी-9, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर,
मनवाखेड़ा, उदयपुर-313003 (राजस्थान)
मो. - 09828351618

रचनाकारों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुल स्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित मूल प्रति में भेजें।
- रचनाकार/लेखक अपना पूरा परिचय, पता, पिनकोड, फोन नंबर एवं फोटो साथ भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचना वापस भेजी जा सकती है। अत: लेखकों से निवेदन है कि लेख की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- अक्षरा' में प्रकाशन हेतु रचना भेजने के बाद उसे अन्यत्र प्रकाशन हेतु न भेजें। यदि अन्यत्र प्रकाशित हो रही हो तो कार्यालय को अवश्य सूचित करें।